त्रिपुरा में हिंदी के प्रति बढ़ती आत्मीयता

- मुनीन्द्र मिश्र

भारत दुनिया में अपनी विविधताओं के लिए प्रसिद्ध है। जहाँ कई सभ्यताएँ समाप्त होकर नई सभ्यताओं में विलीन हो गई वहीं भारत में आज भी प्राचीन परंपरा, संस्कृति उसकी विविधताओं में सजीव है। जहाँ भारत का सांस्कृतिक वैविध्य इसे अद्भुत छटा प्रदान करता है, वहीं भाषाई वैविध्य भारत को दुनिया में अप्रतिम बनाता है। भारत के संविधान में 22 भाषाओं को संवैधानिक दर्जा मिला है इनके अतिरिक्त भी भारत में लगभग 758 और भाषाएँ विद्यमान है। बहुभाषावाद भारतीय परंपरा का अंग है। भारत के अधिकांश व्यक्ति एक से अधिक भाषा बोलते हैं। जीवन भर नई भाषाएँ सीखते रहते हैं। भारत में आधिकारिक तौर पर 122 भाषाएँ मानी गई हैं।

भारत में निरंतर बाह्य आक्रमणकारी आते रहे और अपनी संस्कृति व अपनी भाषा का प्रभाव यहाँ के समाज में निरंतर छोड़ते रहे। अरब आक्रमणकारियों ने भारत में वर्षों तक शासन किया और उन्होंने जहाँ भारतीय संस्कृति को प्रभावित किया वहीं भारतीय समाज के लिए फारसी और अरबी को आधिकारिक कामकाज की भाषा बनाया। तथापि फारसी पूर्णरूपेण भारतीय समाज द्वारा स्वीकार्य नहीं हुई और बस दरबारों तक सीमित होकर रह गई। स्थानीय भाषाओं के फारसी, अरबी मेल से बनी उर्दू या रेखता कुछ काल तक दरबारों में सुशोभित हुई और चूँकि इसमें स्थानीय रंग अधिक था इसलिए ये दरबार से बाहर भी निकली। उसके बाद आया यूरोपीय आक्रमणकारियों का काल उन्होंने देश को सांस्कृतिक रूप से जितना प्रभावित नहीं किया उससे अधिक भाषाई रूप से प्रभावित किया। अंग्रेजी का शिक्षा के माध्यम के रूप में अधिकृत और व्यवस्थित प्रयोग लार्ड मैकाले के उस विवरण पत्र (1835) के द्वारा भारत में आया जिसमें उसने शिक्षा के लिए निर्धारित धन उच्च और मध्य वर्ग के ऐसे भारतीयों की शिक्षा पर ही खर्च करने का मंतव्य प्रकट किया था जिससे उनके शासन के लिए 'एजेंट' का काम करने वाले तैयार हो सकें। इसी मंतव्य को पूरा करने के लिए भारत में अंग्रेजी कामकाज की भाषा बनी और सरकारी कामकाज और सभ्य समाज की भाषा के रूप में सम्मानित हुई।

इसी क्रम में बाह्य भाषाओं के साथ भारतीय भाषाएँ भी विकसित होती गई। हिंदी की यात्रा छन्दस, संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, ब्रज, अवधी के रूप में चलती हुई खड़ी बोली हिंदी के रूप में उन्नीसवी शताब्दी के अंत में स्थापित हुई। देश के स्वतंत्र होने के बाद हिंदी 14 सितंबर, 1949ई. से भारत की राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हुई। हिंदी की राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठा के उपरान्त भी भारत के भाषाई वैविध्य और भारतीय मनस में अंग्रेजी की श्रेष्ठता की भावना और बाजार की अंग्रेजीप्रियता तथा रोजगारपरकता भारतीय भाषाओं के विकास में निरंतर रोधक रहा है।

त्रिपुरा भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र का एक छोटा सा राज्य है। जिसका क्षेत्रफल 10,491 वर्ग किमी. है। इसके उत्तर पश्चिम और दक्षिण में बांग्लादेश है तो उत्तर में असम तथा पूर्व में मिजोरम है। इस प्रदेश की सीमा का 84 प्रतिशत भाग अंतर्राष्ट्रीय सीमा है। त्रिपुरा की जनसंख्या 36.74 लाख है। यहाँ का जनसंख्या घनत्व 350 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी. है। त्रिपुरा भारत में सर्वोच्च साक्षरता दर वाले प्रदेशों में एक है इसकी साक्षरता दर 2011ई. में 87.22% है। प्रदेश की साक्षरता दर पिछले सात आठ वर्षों में काफी बढ़ी है। अत्यंत दुर्गम क्षेत्रों वाला प्रदेश होते हुए भी त्रिपुरा में विद्यालय छोड़ने वालों और कभी भी विद्यालय न जाने वाले बच्चों की संख्या बहुत कम है। यह भारत में सर्वशिक्षा अभियान और राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के सर्वोत्तम क्रियान्वयन वाला प्रदेश है।

त्रिपुरा भारत के प्राचीन राजवंशों में से एक है, जो महाभारत कालीन किरात देश कहलाता था। बाद में यहाँ माणिक्य वंश का शासन रहा। राजमाला नामक ग्रंथ के अनुसार कुल 147 माणिक्य वंश के शासकों ने त्रिपुरा में शासन किया। यह राज्य अंग्रेजों के समय भी स्वतंत्र राज्य के रूप में रहा। 15 अक्टूबर, 1949ई. को त्रिपुरा का भारत में विलय हुआ।। नवंबर 1956ई. को त्रिपुरा को केन्द्र शासित प्रदेश के रूप में मान्यता मिली। 21 जनवरी, 1972ई. को त्रिपुरा पूर्ण राज्य बना। 1982ई. में त्रिपुरा में संविधान के 7वीं अनुसूची के अनुसार स्वायत्त शासी जिला परिषद् की स्थापना हुई। यह परिषद् त्रिपुरा के कुल क्षेत्रफल के 68. 10% क्षेत्र को समाहित करती है। पहले त्रिपुरा एक जिला वाला राज्य था, वर्तमान में 8 जिले हैं।

त्रिपुरा की राजभाषा 'बांग्ला' है। इसके अतिरिक्त कॉकवरक को द्वितीय राजभाषा की मान्यता है। त्रिपुरा के राजभाषा अधिनियम 1960 के अनुसार अंग्रेजी पूर्ववत शासकीय कार्यों के लिए राजभाषा के रूप में मान्य होगी। त्रिपुरा प्रदेश में बड़ी जनसंख्या बांग्ला भाषियों की है। इनका प्रतिशत कुल भाषाभाषियों का 67% है। लगभग 26% लोग कॉकबरक भाषा का प्रयोग करते हैं। लगभग । प्रतिशत लोग मोग भाषा बोलते हैं जबकि 0.65% लोग मनिपुरी भाषी हैं। त्रिपुरा में मुख्य रूप से दो भाषा वर्ग के लोग हैं भारोपीय भाषा परिवार की बांग्ला, चकमा, हिंदी, नेपाली और मणिपुरी (विष्णुपुरिया) तथा चीनी तिब्बती भाषा परिवार की कॉकबरक, दारलांग, हालाम, मैतेई. मिजो, पाइते, राल्ते, तांगखुल, वाईफेई, ताडोउ, बाउम, कोच भाषा। आग्नेय परिवार की संथाली भाषा के भी कुछ बोलने वाले त्रिपुरा में हैं जो चाय बागानों में काम करने यहाँ आए और बस गए हैं। त्रिपुरा प्रदेश में मुख्य रूप से बांग्ला भाषी हैं। यहाँ की लिपि बांग्ला है। इसी लिपि का प्रयोग दूसरी प्रमुख जनजातीय भाषा कॉकवरक के लिए भी होता है। कॉकबरक त्रिपुरा लोगों द्वारा बोली जाती है। जो विभिन्न उपसमुदायों में विभक्त है, जिसके अंतर्गत देवबर्मा, जमातिया, रूपिणी, रियांग, नोआतिया, काइपेंग, कलाई इत्यादि शामिल हैं। संस्कृत साहित्य में इस समुदाय को किरात के रूप में दर्शाया गया है। कॉकवरक भाषा बोड़ो और दिमासा भाषा से बहुत निकट सम्बन्ध रखती है। त्रिपुरा में संथाल लोग चाय के बागानों में काम करने के लिए अंग्रेजों के जमाने में लाए गए। ये अपनी संथाली (मुंडा) भाषा का प्रयोग करते हैं जो कि आग्नेय परिवार की भाषा है। इनकी अपनी लिपि है तथापि वर्तमान में इनकी लिपि बांग्ला और देवनागरी हो गई है। त्रिपुरा के रांखल और हलाम लोगों द्वारा हलाम भाषा का उपयोग किया जाता है। यह चीनी तिब्बती परिवार की भाषा है। त्रिपुरा में यद्यपि ज्यादातर बांग्ला और

स्थानीय कॉकवरक भाषा के बोलने वाले हैं तथापि यहाँ हिंदी के प्रति वैमनस्य का भाव किचित भी नहीं। यहाँ हिंदी को न समझ सकने वाले लोग बहुत कम हैं जो कि दूरदराज गाँवों और पहाड़ों में रहते हैं। जिनका बाहरी दुनिया से संपर्क बहुत कम होता है। अगरतला नगर में हिंदी, बांग्ला के समानान्तर संपर्क भाषा के रूप में विकसित हो रही है।

भारत में हिंदी के विकास में व्यापारी वर्ग का विशेष योगदान रहा है विशेष रूप से मारवाड़ी व्यापारियों का। त्रिपुरा में भी जैसे-जैसे बाजार स्थापित होते गए व्यापार में मारवाड़ी व्यापारी स्थापित होते गए। जो अपने साथ हिंदी को सहेजे हुए लोगों के मध्य हिंदी की स्थापना में मुख्य भूमिका अदा करते रहे। त्रिपुरा के बहुभाषाई क्षेत्र में मारवाड़ी व्यापारियों के माध्यम से हिंदी को बढ़ावा मिलता रहा। मारवाड़ी व्यापारियों के साथ-साथ विहार से आए कामगारों की भूमिका भी हिंदी के स्थापन में महत्त्वपूर्ण रही। बीसवीं सदी के अंतिम दो दशकों में बड़ी संख्या में कामगार बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश से त्रिपुरा में आए इन्होंने स्थानीय लोगों के साथ अपनी भाषा हिंदी में संप्रेषण किया जिससे हिंदी स्वतः ही जनजन की भाषा बनती गई। हिंदी के प्रसार में जितनी भूमिका व्यापारी और कामगारों की होती है, उतनी सरकारी कर्मचारियों की। हिंदी भाषी कर्मचारियों के अतिरिक्त हिंदीतर भाषी क्षेत्रों के कर्मचारियों के लिए भी हिंदी ही संपर्क भाषा का काम करती गई। विशेष रूप से केन्द्रीय कार्यालयों के कर्मचारी जिनका स्थानांतरण पूरे देश में होता है उनके लिए हिंदी लेखन की भाषा पूर्णरूपेण न बन पाने के बावजूद भी मौखिक संपर्क की भाषा के रूप में पूर्णरूपेण स्थापित है। केन्द्रीय कार्यालय हिंदी के प्रमुख वाहक के रूप में आगे आए हैं। केन्द्र के राजभाषा विभाग की हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत आयोजित हिंदी प्रबोध, हिंदी प्रवीण और हिंदी प्राज्ञ परीक्षा के द्वारा हिंदी न जानने वाले कर्मचारी भी हिंदी के ज्ञान को अर्जित करने में सक्षम हो रहे हैं। त्रिपुरा के हिंदी के स्थापन में केन्द्रीय कर्मचारियों के अतिरिक्त सेना और अर्ध सैनिक बलों का विशिष्ट योगदान है। त्रिपुरा में निरंतर बड़ी संख्या में सेना के अतिरिक्त अर्धसैनिक बल रहे हैं जिनमें सीमा सुरक्षा बल, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल और असम राइफल्स के जवान मुख्य हैं। ये सैनिक चाहे जिस भाषाई क्षेत्र के हों इनके सार्वजनिक संप्रेषण की भाषा हिंदी होती है। ये जब भी बाहा समाज के साथ संप्रेषण करते हैं पूर्णरूपेण हिंदी का प्रयोग करते हैं। त्रिपुरा में इनके संपर्क के नियमित रूप से स्थानीय समुदाय में आते रहे जो धीरे-धीरे इनकी हिंदी को अपनाते गए और हिंदी स्वतः ही बांग्ला के साथ त्रिपुरा के सामान्य जन की बोलचाल की भाषा बनती गई।

कोई भी भाषा तभी स्थापित होती है जब वह बाजार द्वारा स्वीकार की जाय और रोजगारपरक हो। बांग्ला के सिवाय त्रिपुरा की अन्य स्थानीय भाषाओं के स्थापित होने में यही मुख्य समस्या थी। हिंदी अपने विशाल समुदाय के साथ न केवल भारत में बाज़ार के लिए मुख्य आकर्षण का केन्द्र रही है बल्कि पिछले वर्षों में पूरे विश्व को हिंदी के बाजार शक्ति ने प्रभावित किया है, जिस कारण विश्व के कई देश हिंदी के अध्यापन को अपने देश में आरंभ करने को मजबूर हुए हैं। दूरदर्शन और टेलीविजन एवं रेडियो के विज्ञापनों की हिंदी भाषा ने त्रिपुरा के लोगों को भी प्रभावित किया है और उन्होंने बाज़ार के साथ चलते

हुए हिंदी को अपनाया है। हिंदी को अपनाने के बाद त्रिपुरा के लोगों ने पूर्वोत्तर के अन्य प्रांतों से इतर स्वयं को भारत के केन्द्रीय भाग में स्वयं को बाजारों एवं रोजगार के लिए सक्षम पाया है।

त्रिपुरा में जनसंख्या का घनत्व प्रति किलोमीटर 350 से अधिक है। इस कारण त्रिपुरा के लोगों को देश के विभिन्न भागों में व्यवसाय और नौकरी के लिए जाना पड़ता है। बंगाल से बाहर कहीं भी जाने पर त्रिपुरा वासियों के लिए स्वाभाविक रूप से संपर्क भाषा के रूप में हिंदी ही नजर आती है। बांग्ला शब्दावलियों के अत्यंत नजदीक होने के कारण हिंदी समझने में त्रिपुरा वासियों को देर नहीं लगती और धीरे-धीरे हिंदी बोलना उनके लिए सहज हो जाता है। त्रिपुरा में हिंदी भाषाई विकास का अध्याय वहाँ की महिलाओं की उपस्थिति के बिना संभव नहीं। वनस्थली विद्यापीठ से शिक्षित होकर आने वाली त्रिपुरा की बालिकाएँ, महिलाएँ त्रिपुरा के विकास में प्रमुख भूमिका निभाने लगीं। ये महिलाएँ त्रिपुरा के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। डॉ. मिलन रानी जमातिया, लिली देबबर्मा, अनुराधा देवबर्मा, खुमतिया देवबर्मा इत्यादि महिलाओं ने जहाँ एक ओर त्रिपुरा के विकास में अपनी प्रमुख भूमिका अदा की है, वहीं इन लोगों ने हिंदी को त्रिपुरा में स्थापित करने में मुख्य भूमिका निभाई है। वैसे भी जिस भाषा को महिलाएँ अपनाने लगें उसके विकास को रोकना संभव नहीं है। मिलन रानी जमातिया ने त्रिपुरा के जनजातीय साहित्य को हिंदी में रूपांतरित करने का बीड़ा उठाया है. उन्होंने त्रिपुरा की लोककथाओं, लोकगीतों पर हिंदी पुस्तकें प्रकाशित की हैं। साथ में सुधन्य देवबर्मा के उपन्यास 'हाचुक खुरियो' को हिंदी में अनूदित किया है। प्रख्यात हिंदी विदुषी डॉ. चन्द्रकला पांडेय ने डॉ. जय कौशल के साथ मिलकर अद्वैत मल्लबर्मन के उपन्यास तितास को हिंदी में रूपांतरित किया है, जो राजशाही के त्रिपुरा की अत्यंत मनोहर झलक देता है। केन्द्रीय हिंदी संस्थान ने हिंदी कॉकबरक अध्येताकोष खुमतिया देबबर्मा, मिलनरानी जमातिया के सहयोग से प्रकाशित किया है।

त्रिपुरा के युवा बड़ी संख्या में देश के विभिन्न कोनों में पढ़ाई कर रहे हैं। युवा वर्ग के लिए नए भारत में संपर्क भाषा के रूप में हिंदी को विशिष्ट स्थान मिल चुका है। यहाँ तक कि बेंगलूरू और हैदराबाद जैसे हिंदीतर भाषी नगरों में अध्ययन के लिए गए युवा सामान्य बातचीत के लिए हिंदी अपना रहे हैं और यही हिंदी के प्रति लगाव उनमें त्रिपुरा में आकर हिंदी के संवाहक बनने का अवसर देता है। वे त्रिपुरा में भी खुलकर हिंदी का प्रयोग कर रहे हैं। त्रिपुरा के जनजातीय समाज के बच्चे कई संगठनों द्वारा देश के विभिन्न कोनों में स्थापित आदिवासी छात्रावासों में निवास कर रहे हैं जहाँ वे प्रारंभिक अध्ययन के कक्षा 12 वीं तक का अध्ययन करते हैं। ये छात्र हिंदी के साथ इतने रच बस जाते हैं कि वापस आने पर घर के बाहर सामान्य रूप से हिंदी बोलने लगते हैं यहाँ तक कि घर में भी उन्हें हिंदी बोलना सरल लगता है।

त्रिपुरा में हिंदी के प्रसार को राजनीतिक दृष्टि से भी सकारात्मक सहयोग मिला। चाहे कम्युनिस्ट पार्टियाँ हों या फिर कांग्रेस या बीजेपी सभी पार्टियों के राष्ट्रीय नेता जनता से संबोधन के लिए हिंदी का प्रयोग करते हैं। विशेष रूप से 2018 के विधानसभा चुनावों में बड़ी संख्या में उत्तर भारत के कार्यकर्ता चुनाव प्रचार के लिए त्रिपुरा आए और गाँव- गाँव में संपर्क किया। इन्होंने संपर्क की भाषा हिंदी अपनाई जिसे पूरे

त्रिपुरा ने आत्मीयता से स्वीकार किया। बड़े बड़े नेताओं ने बड़ी बड़ी रैलियाँ संबोधित की. जिसमें उनके संबोधन की भाषा हिंदी रही। विशेष रूप से त्रिपुरा की जनता में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के हिंदी भाषणों के प्रति विशिष्ट लगाव है. उन्हें सुनने के लिए जनता काफी संख्या में उमड़ती है और बड़े चाव से सुनती है। चुनावों के बाद नए मुख्यमंत्री श्री विप्लब देब का हिंदी प्रेम सर्वविदित है। वे हिंदी से विशिष्ट लगाव रखते हैं और अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी में उद्‌बोधन देने को वरीयता देते हैं। यदि बांग्ला भाषी समूह है तो बांग्ला संबोधन अन्यथा हिंदी उद्‌बोधन उनकी विशिष्टता है।

त्रिपुरा में हिंदी के उभार का विशिष्ट कारण है, जनजातीय समाज द्‌वारा इसे संपर्क भाषा के रूप में बढ़ावा देना। त्रिपुरा में हिंदी जनजातीय समाज द्‌वारा धीरे-धीरे संपर्क भाषा के रूप में विकसित हो रही है। जहाँ जनजातीय समाज अपने लोगों के मध्य कॉकबरक या अन्य जनजातीय मातृभाषा का उपयोग करते हैं वहीं वे अन्य समुदायों के साथ हिंदी वार्तालाप को वरीयता दे रहे हैं। त्रिपुरा विश्वविद्‌यालय में ये देखा जा सकता है कि बहुतायत जनजातीय विद्‌यार्थी आपसी वार्तालाप में हिंदी अपना रहे हैं। जनजातीय समाज द्‌वारा कॉकबरक भाषा की लिपि के रूप में देवनागरी अपनाने की बात भी उठ रही है। देवनागरी लिपि को अपनाने के लिए कॉकबरक कलमबॉय नामक एक संगठन भी लगा हुआ है. जिसके हजारों की संख्या में सदस्य हैं। कॉकबरक विकास परिषद्‌ के अध्यक्ष श्री अतुल देबबर्मा हिंदी प्रेमी हैं और त्रिपुरा में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए जाने जाते हैं।

हिंदी फिल्में और धारावाहिक देश के साथ-साथ त्रिपुरा में बहुत अधिक लोकप्रिय हैं। जिसके कारण हिंदी का प्रयोग त्रिपुरा के जन-जन तक पहुँचा है। हिंदी फिल्में त्रिपुरा प्रदेश में मनोरंजन की सबसे बड़े साधनों में एक हैं। प्रदेश में पहले दूरदर्शन द्‌वारा हिंदी फिल्में तय तिथियों में दिखाई जाती थी जो अत्यंत लोकप्रिय थी। लोग इन्हें देखने के लिए समय से दूरदर्शन के सामने बैठ जाते थे, बाद में निजी चैनलों के आने के बाद हिंदी फिल्मों की बाढ़ सी आ गई। जिन्होंने घर बैठे-बैठे सबको बोलचाल की हिंदी सिखा दी। हिंदी फिल्मों के साथ-साथ जिसने हिंदी के प्रसार को बहुत अधिक बढ़ावा दिया, वह था टेलिविजन के सोप आपेरा सीरियल। दिन भर निरंतर चलने वाले सीरियल जनता के खाली समय के मनोरंजन के महत्त्वपूर्ण साधन हैं। जिनके कारण महिलाएँ घर बैठे हिंदी को अपनाने लगीं। त्रिपुरा में रामायण और महाभारत सीरियल की लोकप्रियता ने लोगों को हिंदी सीखने पर मजबूर किया और महिलाएँ विशेष रूप से हिंदी को समझने लगीं। धीरे-धीरे हिंदी त्रिपुरा की अपनी भाषा लगने लगी। हिंदी के प्रचार-प्रसार में कुछ बाल धारावाहिकों ने अत्यंत प्रमुख भूमिका निभाई है। डोरेमान, छोटा भीम, मोटू पतलू जैसे सीरियल देखकर छोटे बच्चे अपनी मातृभाषा के स्थान पर हिंदी में बात करने में सरलता महसूस करते हैं और वही बच्चों की बोलचाल की भाषा बन जाती है। टेलिविजन में विभिन्न मैचों की कमेंटरी हिंदी में आने के कारण लोगों का हिंदी के प्रति लगाव बढ़ता गया विशेष रूप से क्रिकेट कमेंटरी रेडियो पर हिंदी में सुनना अंग्रेजी से अधिक सरल लगता रहा जिसके कारण हिंदी अपनी लोकप्रियता के शिखर को पाती गई। त्रिपुरा में जिधर देखिए चाहे पूजन हेतु मूर्ति लेने जाना हो या पूजन के उपरांत मूर्ति विसर्जित करना हो जुलूस निकालकर धार्मिक कार्य किए जाते हैं। इन जुलूसों में तेज़ स्वर में गाने बजाए जाते हैं, जिन पर लोग नृत्य करते हैं।

धीरे-धीरे इन जुलूसों के गीतों में हिंदी ने कब सर्वाधिकार कर लिया पता ही नहीं लगा और लोग हिंदी गानों पर नृत्य कर आनंद लेने लगे।

त्रिपुरा भाषाई वैविध्य से भरा-पूरा प्रदेश है। यहाँ अनेकों भाषाएँ है जिनकी अपनी पहचान है। वेशभूषा, "खानपान, रहन सहन में बहुलता त्रिपुरा की पहचान है। लोकतंत्र में भाषा के मामले में केवल संख्या या आँकड़ों पर ही सबकुछ निर्भर नहीं करता बल्कि भाषा की स्वीकार्यता सबसे प्रमुख होती है। संविधान की दृष्टि से हिंदी राजभाषा है. इसलिए उस पर सरकारी कामकाज का माध्यम बनने की ज़िम्मेदारी है। इस रूप में हिंदी केन्द्रीय कार्यालयों की प्रमुख भाषा है। संविधान की धारा 351 में हिंदी को सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने वाली भाषा के रूप में विकसित करने की बात कही गई है। संपर्क भाषा के रूप में हिंदी संविधान की इसी भावना को प्रतिपादित करती है। त्रिपुरा में हिंदी सामाजिक समरसता की प्रमुख कड़ी के रूप उभरी है। समाज के सभी वर्गों द्वारा बोलचाल की भाषा के रूप में बांग्ला और कॉकबरक के साथ-साथ सौहार्दभाव से स्वीकार की जा रही है। त्रिपुरा में हिंदी का विकास त्रिपुरा के 40 लाख से अधिक लोगों के लिए भारतीय मुख्यधारा से लगाव का विकास है। हिंदी के विकास द्वारा रोजगार और व्यवसाय हेतु त्रिपुरा वासियों के लिए एक सर्वमान्य माध्यम मिला है। इसे पूरे त्रिपुरा में आत्मीयता से स्वीकारा गया है।